चित्र

चित्र एक कला है।

कला एक चाह है।

और चाह इत्तेफाक है।

कुछ लोग हफ्ते भर बनाते रहते हैं एक ही चित्र।

कुछ झोंपड़ी, पेड़ और सूर्य बनाकर छोड़ देते हैं।

कुछ अन्य एक ही रंग को गुनते रहते हैं –

वे अपनी सारी कल्पनाओं को कागज़ पर उतार देते हैं।

कुछ लोग हमें कहते हैं कि जो चीज़ देख रहे हो

उसी का बनाओ एक चित्र।

पर हम भी एक चित्र हैं जिसे किसी ने बनाया है

वास्तव में हमारे अन्दर भी चित्रों की भरमार है –

कोशिश करके भी इन चित्रों को हम बना नहीं पाते हैं

वे हमारे हाथ से छूटते जाते हैं।

फिर भी वे हमारी पकड़ में बने रहते हैं।

–उत्सुक शर्मा, दसवीं, नई दिल्ली

न धन्यवाद, न सॉरी

आज हमारा स्कूल साढ़े आठ बजे लगा था। हमारे सर चश्मा भूल गए थे। सर ने कहा मैं आज चश्मा भूल गया हूँ। पाँचवीं में हम दो बच्चे आए थे। मेरा नाम विकास है। और मेरे दोस्त का नाम राहुल है। राहुल को हिन्दी के उत्तर याद नहीं हुए थे। तो सर ने कहा, "कोई भी प्रश्न के उत्तर पूछे तो उसे पक्का याद कर लेना। बैठकर याद कर लो।" यह शनिवार की बात है। हमारे स्कूल के सामने वाले हमारे सर के लिए कद्दू-टमाटर लाए थे। उनका नाम सुरेश था। हमारे सर का नाम कैलाश उपाध्याय है। सर ने कद्दू-टमाटर ले लिए और हमारे सर ने धन्यवाद नहीं कहा। हमारे ट्यूशन वाले सर को कुछ भी सामान देते हैं तो हमारे सर धन्यवाद कहते हैं। कुछ कहानियाँ सुनाते हैं तो कुछ गलतियाँ होती हैं तो सर सॉरी कहते हैं। हमारे ट्यूशन वाले सर का नाम जगदीश वाधेला है।

– विकास पोरवाल, पाँचवीं, गाँव ढेंड़िया, उज्जैन, म. प्र.

–यश वात, छठी, उज्जैन, म. प्र.

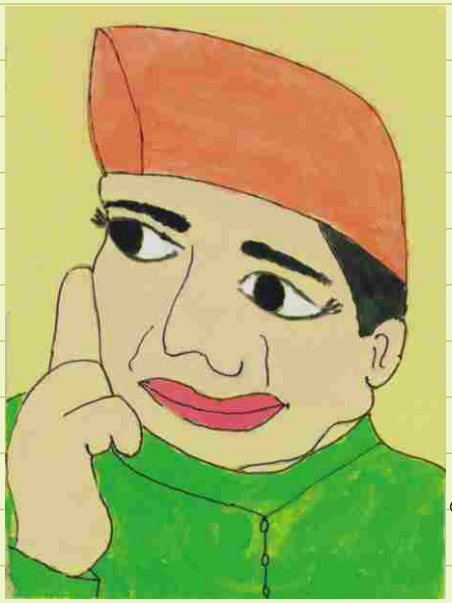

–आशीष, छठी, अपना घर, कानपुर, उ. प्र.